2. संस्कृत लौकिक साहित्य के स्वरूप और उसकी विशेषताओं पर प्रकाश डालिए । (15)

अथवा

उर्दू साहित्य का विस्तार से विश्लेषण कीजिए ।

3. कालिदास कृत उत्तरमेघ में व्यक्त विरह-भावना पर प्रकाश डालिए । (15)

अथवा

सप्तवर्ण: रामकाव्य का जन्म की भाषा शैली की विशेषताएँ लिखिए ।

4. संत नामदेव की भक्ति-भावना का वर्णन कीजिए । (15)

अथवा

ललद्यद के पदों की मूल-संवेदना पर प्रकाश डालिए ।

5. काबुलीवाला कहानी की विशेषताओं का वर्णन कीजिए । (15)

अथवा

'रामविजय' नाटक के कथ्य को स्पष्ट कीजिए ।

[This question paper contains 4 printed pages.]

22.12.2023(M)

Your Roll No..............

Maitreyi College ★ Chanakya Puri, New Delhi-110021 LIBRARY

G

Sr. No. of Question Paper : 512

Unique Paper Code : 2052102301

Name of the Paper : Bhartiya Sahitya

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi**

Semester : III – DSC-7

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (10 + 10 + 10)

(क) देखकर तब विकल क्रौंची,
व्याध - चरित - अधर्म,
बह चली वाणी सहज
ले द्रवित उर का मर्म !

P.T.O.

अथवा

बताऊँ मित्र, तुम्हें वह क्या करती मिलेगी
सजा रही होगी देव देवियों के निमित्त नैवेद्य
या कि रही होगी आंक कल्पना प्रसूत विरह-खिन्न
मेरा यह शरीर
रही होगी पूछ पिंजड़े में टँगी मिठबोली मैना से....
गुणवन्ती बोल, आते भी हैं वह तुम्हें याद?
है जान से प्यारी थी!

(ख) ऐसो रामराइ अंतरजामी।
जैसे दरपन माहि बदन परवानी ।। रहाउ ।।
बसै घटाघट लीपन छीपै। बंधान मुकता जात न दीसै ।।1।।
पानी माहि देषु मुषु जैसा। नामें को सुंआमी बीठलु औइसा ।।2।।

अथवा

मुझ पर वे चाहे हसें, हजारों बोल कसें
हंस लेने दो - पर होगा इसका खेद किसे?
मैं होऊं शिव की सच्ची भक्त अगर मन से
क्या मैला होता मुकुर राख के गिरने से?

(ग) कुछ दिन बाद एक दिन सवेरे किसी काम से घर से बाहर जाते समय देखा, मेरी दुहिता द्वार के पास बेंच के ऊपर बैठकर अनर्गल बातें कर रही है और काबुलीवाला उसके पैरों के पास बैठा मुस्कुराता हुआ सुन रहा है और बीच-बीच में प्रसंगानुसार अपना मतामत भी मिश्रित बांग्ला में व्यक्त कर रहा है। मिनी को अपने पंचवर्षीय जीवन की अभिज्ञता में पिता के अतिरिक्त ऐसा धैर्यवान श्रोता कभी नहीं मिला था।

अथवा

पीत वस्त्र, श्याम शरीर अति रूचिकर।
पंकज नयन मंद-मंद मुस्कान ।।
मणिमय मुकुट और कुण्डल झूलें।
उन्हें देख कामदेव को भी भूलें ।।
माणिक और मोतियों का हार।
चमकें ज्यूँ गगन के तारे अपार ।।
चरणों में मणि जडित कड़े हैं।
यह कृष्ण दास, शंकर कहे हैं ।।